3 रहीम

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1556 ई०।
- **जन्म-स्थान**—लाहौर।
- **पिता का नाम**—बैरम खाँ।
- **पूरा नाम**—अब्दुर्रहीम खानखाना।
- **भाषा**—ब्रज।
- **मृत्यु**—सन् 1627 ई०।

जीवन-परिचय—रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म सन् 1556 ई० में लाहौर (वर्तमान में पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता बैरम खाँ मुगल सम्राट् अकबर के संरक्षक थे। किन्हीं कारणोंवश अकबर बैरम खाँ से रुष्ट हो गया था और उसने बैरम खाँ पर विद्रोह का आरोप लगाकर हज करने के लिए मक्का भेज दिया। मार्ग में उसके शत्रु मुबारक खाँ ने उसकी हत्या कर दी। बैरम खाँ की हत्या के पश्चात् अकबर ने रहीम और उनकी माता को अपने पास बुला लिया और रहीम की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की। प्रतिभासम्पन्न रहीम ने हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इनकी योग्यता को देखकर अकबर ने इन्हें अपने दरबार के नवरत्नों में स्थान दिया। ये अपने नाम के अनुरूप अत्यन्त दयालु प्रकृति के थे। मुसलमान होते हुए भी ये श्रीकृष्ण के भक्त थे। अकबर की मृत्यु के पश्चात् जहाँगीर ने इन्हें चित्रकूट में नजरबन्द कर दिया था। केशवदास और गोस्वामी तुलसीदास से इनकी अच्छी मित्रता थी। इनका अन्तिम समय विपत्तियों से घिरा रहा और सन् 1627 ई० में मृत्यु हो गयी।

साहित्यिक सेवाएँ—पिता बैरम खाँ अपने युग के एक अच्छे नीतिज्ञ एवं विद्वान् थे, अतः बाल्यकाल से ही रहीम को साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न हो गया था। योग्य गुरुओं के सम्पर्क में रह कर इनमें अनेक काव्य-गुणों का विकास हुआ। इन्होंने कई ग्रन्थों का अनुवाद किया तथा ब्रज, अवधी एवं खड़ीबोली में कविताएँ भी लिखीं। इनके 'नीति के दोहे' तो सर्वसाधारण की जिह्वा पर रहते हैं। दैनिक-जीवन की अनुभूतियों पर आधारित दृष्टान्तों के माध्यम से इनका कथन सीधे हृदय पर चोट करता है। इनकी रचना में नीति के अतिरिक्त भक्ति एवं शृंगार की भी सुन्दर व्यंजना दिखायी देती है। इन्होंने अनेक ग्रन्थों का अनुवाद भी किया।

रचनाएँ—रहीम की रचनाएँ इस प्रकार हैं—**रहीम सतसई, शृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली एवं बरवै नायिका-भेद-वर्णन।** 'रहीम सतसई' नीति के दोहों का संकलन ग्रन्थ है। इसमें लगभग 300 दोहे प्राप्त हुए हैं। 'मदनाष्टक' में श्रीकृष्ण और गोपियों की प्रेम सम्बन्धी लीलाओं का सरस चित्रण किया गया है। 'रास पंचाध्यायी' श्रीमद्भागवत पुराण के आधार पर लिखा गया ग्रन्थ है जो अप्राप्य है। 'बरवै नायिका भेद' में नायिका भेद का वर्णन बरवै छन्द में किया गया है।

भाषा-शैली—रहीम जनसाधारण में अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं, पर इन्होंने कवित्त, सवैया, सोरठा तथा बरवै छन्दों में भी सफल काव्य-रचना की है। इन्होंने ब्रज भाषा में अपनी काव्य-रचना की। इनके ब्रज का रूप सरल, व्यावहारिक, स्पष्ट एवं प्रवाहपूर्ण है। ये कई भाषाओं के जानकार थे, इसलिए इनकी काव्य-भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग भी देखने को मिलते हैं। अवधी में ब्रजभाषा के शब्द तो मिलते ही हैं, पर अवधी के ग्रामीण शब्दों का भी खुलकर प्रयोग इन्होंने किया है। इन्होंने मुक्तक शैली में काव्य-सृजन किया। इनकी यह शैली अत्यन्त सरस, सरल एवं बोधगम्य है। ♦

दोहा

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।1।।

रहिमन प्रीति सराहिए मिले होत रंग दून।
ज्यों जरदी हरदी तजै, तजै सफेदी चून।।2।।

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।3।।

रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ।।4।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
बिपति-कसौटी जे कसे, तेही साँचे मीत।।5।।

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह।।6।।

दीन सबन को लखत हैं, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय।।7।।

प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाय।।8।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरेउ चटकाय।
टूटे से फिरि ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।9।।

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वांति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।10।।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहिं सुजान।।11।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।12।।

यों रहीम सुख होत है, बढ़त देख निज गोत।
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत।।13।।

रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर अरु प्रीति।
काटे-चाटे स्वान के, दुँहूँ भाँति विपरीति।।14।।

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
(अ) जो रहीम.....रहत भुजंग।
(ब) कदली, सीप.....फल दीन।

(स) रहिमन धागा·····परि जाय।
(द) तरुवर फल·····संचहि सुजान।
(य) रहिमन देखि बड़ेन·····करै तरवारि।
(र) रहिमन ओछे·····भाँति विपरीति।

2. रहीम का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
अथवा रहीम का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डालिए।
अथवा रहीम की साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
अथवा रहीम का जीवन-परिचय अपने शब्दों में लिखिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हमारे नेत्रों से आँसू निकलकर क्या प्रकट करते हैं?
2. रहीम के अनुसार सच्चे एवं झूठे मित्र की क्या पहचान है?
3. *'जुरै गाँठ परि जाय'* के द्वारा कवि ने प्रेम सम्बन्धों की किस विशेषता को बताया है?
4. रहीम ने किस प्रकृति के मनुष्य से प्रेम और शत्रुता दोनों घातक बताया है और क्यों?
5. कौन दीनबन्धु के समान होता है?
6. रहीम ने सच्चे और झूठे मित्र की क्या पहचान बतायी है?
7. रहीम किस प्रकार की प्रीति की सराहना करने को कहते हैं?
8. जल के प्रति मछली के प्रेम की क्या विशेषता है?
9. *'टूटे सुजन मनाइये, जौ टूटे सौ बार'* का भाव स्पष्ट कीजिए।
10. कुसंग का किस प्रकृति के लोगों पर प्रभाव नहीं पड़ता?

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. नेत्रों से निकला हुआ आँसू क्या प्रकट करता है?
2. रहीम ने किस भाषा में काव्य-सृजन किया?
3. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
(अ) कुसंग का सज्जनों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ( )
(ब) धन का संचय सज्जन दूसरों के लिए करते हैं। ( )
(स) ओछे लोगों से प्रेम रखना चाहिए। ( )
(द) सज्जन यदि रूठ जाये तो उसे नहीं मनाना चाहिए। ( )

4. रहीम की दो रचनाओं के नाम बताइये।
5. रहीम का पूरा नाम क्या था?
6. रहीम को किस प्रकार का अमृत पीना अच्छा नहीं लगता?

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित में लक्षण बताते हुए अलंकार का नाम लिखिए–
(अ) बनत बहुत बहु रीति। (ब) रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।
2. निम्नलिखित का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
(अ) टूटे सुजन·····टूटे मुक्ताहार।
(ब) बिपति कसौटी·····साँचे मीत।
(स) रहिमन देखि·····दीजिए डारि।

● आन्तरिक मूल्यांकन

रहीम के नीति सम्बन्धी दोहों को पढ़ने के बाद आप पर उसका क्या प्रभाव पड़ा? स्पष्ट कीजिए।

♦